अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर ऑनलाइन काव्य गोष्ठी का आयोजन

पिलानी, (मृदुल पत्रिका)। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर सीएसआईआर-सीरी में बुधवार को ऑनलाइन काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। मीडिया विभाग के प्रभारी रमेश बौरा ने बताया कि ऑनलाइन आयोजित की गई इस काव्य संध्या में संस्थान के पूर्वसहकमियों व उनके परिजनों के साथ-साथ सीएसआईआर मुख्यालय के साथी और संस्थान के वर्तमान कार्मिकों ने हिंदी सहित भारत की प्रांतीय भाषाओं व बोलियों में अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। काव्य गोष्ठी का आयोजन वर्चुअल रूप से किया गया था जिसमें संस्थान में कार्यरत कार्मिकों के अलावा उनके परिजनों ने भी श्रोताओं के रूप में कविताओं का आनंद लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने की। इस अवसर पर श्रोताओं के रूप में संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी एम एस टीम्स के माध्यम से काव्य गोष्ठी से जुड़े। काव्य संध्या के प्रथम खंड में कवि प्रतिभागियों ने संस्कृत, तमिल, तेलुगू, उड़िया, बांग्ला, गढ़वाली, कुंमाऊंनी, मैथिली, राजस्थानी आदि भाषाओं एवं बोलियों तथा दूसरे खंड में हिंदी की रचनाओं का वाचन किया गया।अपने अध्यक्षीय

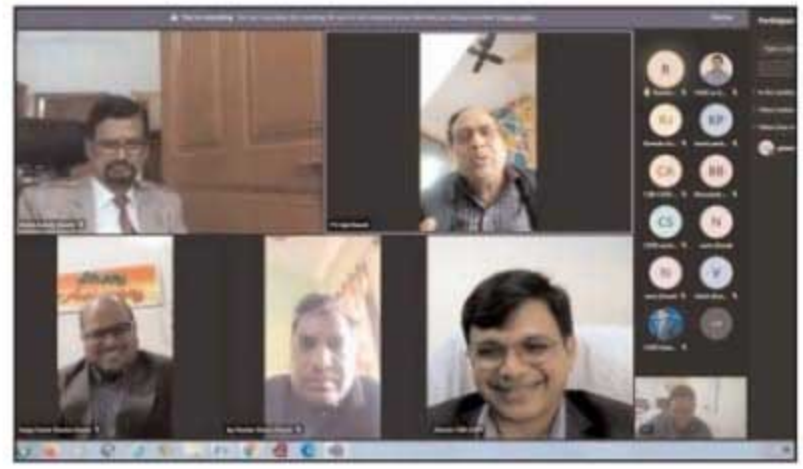

संबोधन में डॉ पी सी पंचारिया ने अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाए जाने की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। देश की बहुभाषी संस्कृति को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि अनेकता में एकता ही हमारे देश की विलक्षण विशेषता है और आज के कविता पाठ ने इसे सार्थक सिद्ध किया है।संस्थान के पूर्व सहकर्मियों दिनेश कुकरेती ने 'सुमुखिनी अगर मुख पखारा न होता, सिंधु का नीर खारा न होता' और 'रक्तरंजित खड्ग की सौगंध लेकर बोलता हूँ, मैं हिमाला के शिखर पर शत्रुबल को तोलता हूँ' के अलावा गढ़वाली गीत सुनाकर श्रोताओं की वाहवाही लूटी। प्रभुदयाल अजल ने ब्रजभाषा में गंगू तेली की व्यथा, और मेरी बीवी मेरे बिना खाना नहीं खाती, के अलावा व हिंदी मुक्तकों व कविताओं से हास्य-व्यंग्य की छटा बिखेरी। कमला पांडे (पत्नी नरेश कुमार पांडे) और श्रीमती इंदिरा जोशी (पत्नी डॉ एलएम जोशी ने) अपने मधुर स्वर में कुमाऊंनी, डॉ एल पद्मावती ने तमिल, डॉ अयन बंद्योपाध्याय ने बांग्ला, डॉ रविंद्र झा ने मैंथिली, डॉ बी ए बोत्रे ने मराठी, डॉ साईं कृष्णा वडाडी ने तेलुगू, डॉ एम संतोष कुमार ने उड़िया तथा महेन्द्र सिंह, संजय शर्मा व मुरलीधर ने राजस्थानी रचनाओं से मातृभाषा दिवस पर आयोजित इस कार्यक्रम में भारत की बहुभाषी संस्कृति की सुंदर झलक दिखाई। सीरी विद्या मंदिर के संजय शर्मा ने राजस्थानी के अलावा हिंदी व संस्कृत में भी काव्य पाठ किया। दिनेश कुकरेती और प्रभुदयाल अजल ने अपने कविता पाठ से श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। इसके अलावा सुदेश कुमार (सीएसआईआर मुख्यालय), डॉ सुशील शुक्ल, श्रीमती मंजू शरण मंजुल (पत्नी जयशंकर शरण), महेन्द्र सिंह, डॉ निखिल सूरी, डॉ जयगोपाल पांडेय, कु. रक्षिता पूनिया (पुत्री डॉ सुमित्रा सिंह), कु. प्रीति पाल (पीएचडी छात्रा), किशन लाल आदि ने हिंदी कविता वाचन से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।कार्यक्रम का संचालन संस्थान के मीडिया एवं जनसंपर्क अधिकारी व राजभाषा प्रभारी रमेश बौरा ने किया।